Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC)
Official Publication of Indian Mental Health & Research Centre
ISSN: 2582-2004
Volume 05, Issue 01
DOI: 10.46523/jarssc.05.01.22
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 3.575

आज के अंधेरे में – दिनकर

डॉ0 दीपक कुमार राय
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, सी0 एस0 एन0 पीजी कॉलेज, हरदोई

जिन कवियों ने हिन्दी कविता को छायावाद के सूक्ष्मजयी वातावरण से बाहर निकालकर यथार्थ की दुनिया में पहुँचाया, उसमें जीवन का तेज भरा और उसे सामायिक प्रश्नों से उलझना सिखाया, उसमें रामधारी सिंह दिनकर का नाम सर्वोच्च है। सच पूछा जाए तो हिन्दी की राष्ट्रीय कविता ने तीन ही मंजिल तय की है। उसकी पहली मंजिल भारतेन्दु हरिश्चन्द्र में मिलती है, जब उसने ब्रज के करील कुंजों को छोड़कर देश–दुर्दशा की ओर साश्रुनयन निहारा था। उसकी दूसरी मंजिल के पुरोधा मैथिलीशरण गुप्त बने जब उसने वर्तमान की विवशता के साथ अतीत का गौरवपूर्ण स्मरण किया एवं तीसरी मंजिल में वह दिनकर की उँगली पकड़कर आगे बढ़ी तथा अन्याय, अत्याचार, राजनीतिक दासता और आर्थिक शोषण के विरुद्ध खुलकर विद्रोह किया।

राष्ट्रीय भावों के तुरंग पर सवार होकर हिन्दी साहित्याकाश में लगभग आधी आबादी तक आलोकित होने वाले रामधारी सिंह दिनकर का आविर्भाव हिन्दी कविता के छायावादोत्तर युग की सबसे बड़ी घटना है। दिनकर का उदय राष्ट्रीय भावों की उस धारा से हुआ जो भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, मैथिलीशरण गुप्त, सुभद्रा कुमारी चौहान, माखनलाल चतुर्वेदी और बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' से बहती आ रही थी। दिनकर की रस ग्राहिनी शिराएं संस्कृत, बंग्ला और उर्दू से भी संतृप्त थीं।

Received: 15.01.2022 **Accepted:** 12.02.2022 **Published**: 12.02.2022

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.

Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC)
Official Publication of Indian Mental Health & Research Centre
ISSN: 2582-2004
Volume 05, Issue 01
DOI: 10.46523/jarssc.05.01.22
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 3.575

इसलिए जहाँ एक ओर इनमें कालिदास और रवीन्द्रनाथ का प्रभाव पड़ा, वहाँ दूसरी ओर काजी नजरुल इस्लाम का आक्रामक और संक्रामक सिंहनाद भी इनकी वाणी में आ मिला। फलस्वरूप दिनकर की वाणी में ओज, उत्साह और श्रृंगार की त्रिवेणी हिलकोरे मारने लगीं।

रामधारी सिंह दिनकर का जन्म सिमरिया गांव के एक निम्न मध्यमवर्गीय किसान परिवार में 23 सितम्बर, 1908 को हुआ। 'दिनकर' का यह गांव बिहार प्रदेश के पुराने मुंगेर (बेगूसराय) जिले में अवस्थित है जो मिथिलांचल का प्रसिद्ध तीर्थ भी है। दिनकर का लालन–पालन एक संस्कारवान परिवार में हुआ। इनके पितामह का नाम शंकर राय, पिता का नाम बाबू रविराय व माता का नाम मनुरूप देवी था। आस–पास के गांवों में इनके पिता मानस मर्मज्ञ के रूप में जाने जाते थे। इनके हिंदी–प्रेम के बीज–नयन का प्रमाण सन् 1928 में हाईस्कूल की परीक्षा में पूर प्रदेश में सर्वाधिक हिंदी विषय के अंक एवं तद्विषयक प्राप्त 'भूदेव स्वर्ण पदक' से भी होता है। इनकी पहली कविता हिंदी सेवी संपादक पं0 मातादीन शुक्ल के संपादन में जबलपुर से प्रकाशित 'छात्र–सहोदर' में प्रकाशित हुई थी। इसी दौरान उन्होंने अपना नाम 'दिनकर' भी रखा। इनकी पहली कविता पुस्तक 'प्रणभंग' (1929) 21 वर्ष की अवस्था में प्रकाशित हुई। रचनाधर्मिता की यह ऊर्ध्वमुखी यात्रा फिर बालक 'दिनकर' की ओजस्वी लेखनी से अपने स्वरूप व क्षेत्र का विस्तार देती हुई पद्य से गद्य व साहित्य से अन्यान्य विधाओं को महिमामंडित, गौरवान्वित करती रही, रेणुका, हुंकार, रश्मिरथी, उर्वशी, कुरुक्षेत्र, संस्कृति के चार अध्याय सहित अनेक उत्कृष्ट पुस्तकें दिनकर के ओजस्वी लेखन के रूप में हिंदी

Received: 15.01.2022 **Accepted:** 12.02.2022 **Published**: 12.02.2022

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.

Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC)
Official Publication of Indian Mental Health & Research Centre
ISSN: 2582-2004
Volume 05, Issue 01
DOI: 10.46523/jarssc.05.01.22
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 3.575

साहित्य की अमूल्य धरोहर हैं। दिनकर की सम्पूर्ण काव्य रचना को दो धाराओं में बाँटना चाहिये। उनकी कविता की एक धारा राष्ट्रीय क्षितिज पर क्रांति और विद्रोह का शंख फूँकती है और दूसरी धारा में कोमल भावों की सौंदर्य और श्रृंगारपरक अभिव्यक्ति हुई है। पहली भाव–धारा का सबसे सबल उद्घोष 'हुंकार' 'कुरुक्षेत्र' और 'परशुराम की प्रतीक्षा' में हुआ है। दूसरी धारा 'रसवन्ती' से होती हुई 'उर्वशी' में पूर्णता प्राप्त करती है। 'रेणुका' उनकी जवानी का उद्घोष है जो 'कुरुक्षेत्र' में आकर पूर्णता प्राप्त करता है। राष्ट्रीयता की धारा रेणुका, हुंकार और कुरुक्षेत्र से होती हुई परशुराम की प्रतीक्षा में पर्यवसित हुई है।

दिनकर राष्ट्रीय भावनाओं के ओजस्वी गायक हैं। उनकी कविताओं में मुख्य रूप से वीर और श्रृंगार रस की धारा प्रवाहित हुई है। उनकी वीरता राष्ट्रीय चेतना से उत्पन्न हुई थी। इसलिए दिनकर की रचनाओं में राष्ट्रीय भावों का उद्देलित सागर हिलकोरें मारता है। आधुनिक हिन्दी साहित्य में राष्ट्रीयता की भावना हमारे स्वाधीनता संग्राम की देन है। जब संपूर्ण समाज देशमाता की जंजीर काटने के लिए अपनी जवानी को राष्ट्र की बलिवेदी पर न्योछावर कर रहा हो, जब शासन और शोषण के विरुद्ध वातावरण ही आग उगल रहा हो, जब गंगा का जल क्रांति ज्वाला से तप्त होकर खौल रहा हो, जब हिमालय उछलकर समुद्र को मथ डालने पर तुला हो तो ऐसे समय में कोई कवि फूलों और तितलियों की सतरंगी पंखुरी में कैसे उलझा रह सकता है।

दिनकर की राष्ट्रीय भावना सबसे पहले रेणुका काव्य संग्रह में क्रांति की चिनगारी बनकर छिटकी। 'हुंकार' और 'सामधेनी' से होती हुई यह भावना कुरुक्षेत्र

Received: 15.01.2022 **Accepted:** 12.02.2022 **Published**: 12.02.2022

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.

Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC)
Official Publication of Indian Mental Health & Research Centre
ISSN: 2582-2004
Volume 05, Issue 01
DOI: 10.46523/jarssc.05.01.22
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 3.575

में प्रवेश कर गयी। 'रेणुका' दिनकर जी की प्रथम प्रकाशित काव्यकृति है। हिन्दी के प्रख्यात लेखक व आजादी की लड़ाई में अग्रगण्य भूमिका निभाने वाले 'रामवृक्ष बेनीपुरी' दिनकर की प्रशंसा में लिखते हैं कि–

"विश्व साहित्य में क्रांति पर जितनी कविताएं हैं, 'दिनकर' की 'विपथगा' उनमें से किसी के भी समकक्ष आदर का स्थान पाने की योग्यता रखती है। क्रांति संबंधी उनकी दूसरी कविता 'दिगम्बरी' भी हिन्दी–संसार में जोड़ नहीं रखती। मालमू होता है, कवि आँखो देखी, कानों सुनी बात कह रहा है–

धरातल को हिला गूँजा धरणि में राग कोई,
तलातल में उभरती आ रही है आग कोई,
दिशा के बन्ध से झंझा विकल है छूटने को,
धरा के वक्ष से आकुल हलाहल फूटने को।

और इस क्रांति के वाहन कौन होंगे? युवक ही तो? अतः दिनकर एक मौका भी ऐसा नहीं जाने देता, जब वह इन युवकों से दो–दो बातें न कर ले। कभी वह उन्हें उलाहना देता है।

खेल रहे हिलमिल घाटी में कौन शिखर का ध्यान करे?
ऐसा वीर कहाँ कि शैल–रुह फूलों का मधु–पान करे।

कभी उन्हें वह चेतावनी देता है–

लेना अनल किरीट भाल पर ओ आशिक होने वाले,

Received: 15.01.2022 **Accepted:** 12.02.2022 **Published**: 12.02.2022

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.

Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC)
Official Publication of Indian Mental Health & Research Centre
ISSN: 2582-2004
Volume 05, Issue 01
DOI: 10.46523/jarssc.05.01.22
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 3.575

कालकूट पहले पी लेना, सुधा–बीज बोने वाले।

दोस्तों याद रखो–

धरकर चरण विजित श्रृंगों पर झंडा वही उड़ाते हैं,
अपनी उंगली पर जो खंजर की जंग छुड़ाते हैं।
पड़ा समय से होड़, खींच मत तलवों को काँटे रुककर,
फूँक–फूँक चलती न जवानी चोटों से बचकर, झुककर।

उन्हें जय–यात्रा के लिए उत्तेजित करते हुए मानो आखिरी बार कवि कहे देता है–

चल यौवन उद्दाम, चल, चल बिना विराम,
विजय–मरण, दो घाट, समर के बीच कहाँ विश्राम? 1

महान रचयिता की रचनाएं युगीन सत्य का उद्घाटन करती हैं। वह समकालीन होकर सर्वकालिक महत्ता स्थापित कर लेती हैं, कबीर, तुलसी, बिहारी, रहीम, भारतेन्दु, निराला आदि की काव्य–यात्रा तत्काल से सर्वकाल की काव्य यात्रा है। इनकी रचनाओं में जो युगीन सत्य प्रकट हुआ है, वह आज भी प्रासंगिक है। जाति–पाँति, बाह्याडम्बर, वर्ग–भेद, दलित समस्या, स्त्री समस्या, अनैतिकता, पथभ्रष्टता जितनी तब थी उससे ज्यादा परिमाण में आज है, महाकवि दिनकर में ऐसे रचनाकारों में अग्रगण्य हैं जिनकी रचनाएं सर्वकालिक महत्व की है। उनकी प्रसिद्ध कविता 'विपथगा' की ये अमर पंक्तियां दृष्टव्य हैं–

श्वानों को मिलते दूध–वस्त्र, भूखे बालक अकुलाते हैं,

Received: 15.01.2022 **Accepted:** 12.02.2022 **Published**: 12.02.2022

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.

Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC)
Official Publication of Indian Mental Health & Research Centre
ISSN: 2582-2004
Volume 05, Issue 01
DOI: 10.46523/jarssc.05.01.22
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 3.575

माँ की हड्डी से चिपक, ठिठुर जाड़ों की रात बिताते हैं,
युवती के लज्जा–वसन बेच, जब ब्याज चुकाए जाते हैं,
मालिक जब तेल–फुलेलों पर, पानी–सा द्रव्य बहाते हैं,
पापी महलों का अहंकार, देता मुझको अब आमंत्रण,
झन–झन–झन–झन–झन–झनन–झनन। 2

उपरोक्त पंक्तियों में व्यक्त युग–सत्य आज और भी विदूप हो गया है। आज अमीरीं–गरीबी का फासला बढ़ता जा रहा है, अमीर और अमीर हो रहा है जबकि गरीब और गरीब। आज भारत में अरबपतियों की संख्या बढ़ती जा रही है जबकि इसी के सापेक्ष एक बड़ी आबादी आज भी भुखमरी की शिकार है। वैश्विक स्तर पर विकसित देशों के विपरीत एक तीसरी दुनिया है, जो स्वास्थ्य, शिक्षा, खाद्यान्न, पेयजल व आधारभूत मानवीय सुविधाओं से वंचित है।

इसी संग्रह की 'वसन्त के नाम पर' शीषर्क कविता में कवि राजपूताने की बलिदानी धरती को याद करता है। वह बताता है कि यह धरती राणा सांगा, महाराणा प्रताप जैसे वीरों की धरती है जिन्होंने देश–प्रेम के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया। कवि कहता है कि मेरी भी इच्छा है कि मैं श्रृंगार व प्रेम के गीत लिखूँ किन्तु देश की वर्तमान पतन की स्थिति को देखकर हृदय चीत्कार कर उठता है और हृदय में फूल के स्थान पर शूल चुभने लगते हैं–

कलम उठी कविता लिखने को, अन्तस्तल में ज्वार उठा रे!
सहसा नाम पकड़ कायर का, पश्चिम–पवन पुकार उठा रे!

Received: 15.01.2022 **Accepted:** 12.02.2022 **Published**: 12.02.2022

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.

Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC)
Official Publication of Indian Mental Health & Research Centre
ISSN: 2582-2004
Volume 05, Issue 01
DOI: 10.46523/jarssc.05.01.22
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 3.575

देखा शून्य कुँवर का गढ़ है, झाँसी की वह शान नहीं है।
दुर्गादास–प्रताप बली का प्यारा, राजस्थान नहीं है।
जलती नहीं चिताएं जौहर की, मुठ्ठी में बलिदान नहीं है।
टेढ़ी मूँछ लिए रण–वन, फिरना अब तो आसान नहीं है। 3

'प्रणति' शीर्षक कविता में कवि उन बलिदानों वीरों के प्रति अपना आभार प्रदर्शित करता है जो देश को आजाद कराने हेतु सूली पर चढ़ गये। उन्हें कोई लोभ–मोह, भय, आसक्ति स्वतंत्रता के कठिन पथ से विचलित नहीं कर सकी, ऐसे अमर शहीदों के ऊपर कलम चलाना कवि अपना पुण्यलाभ मानता है–

कलम, आज उनकी जय बोल!
जला अस्थियाँ बारी–बारी, छिटकाई जिसने चिनगारी।
जो चढ़ गये पुण्य–वेदी पर, बिना गरदन मोल।
कलम, आज उनकी जय बोल। 4

दिनकर की राष्ट्रीयता वास्तव में भाववादी राष्ट्रीयता है। उसमें चिंतन की संगति की अपेक्षा आवेग और आवेश ही प्रधान है। पराधीन वातावरण में अंग्रेजों के शोषण और अत्याचारों की प्रतिक्रिया का शक्तिशाली रूप दिनकर में दिखाई देता है, जिसमें उत्साह है, उमंग है, प्रेरणा है और आस्था है। 'हिमालय' शीर्षक कविता में कवि ने देश के वैसे लोगों को भी क्रांति की गंगा में कूद पड़ने के लिए उत्साहित किया है जो हिमालय की तरह निश्चिंत होकर किसी लक्ष्य के लिए साधना कर रहे थे। वे अपनी चिरमौन समाधि तोड़कर भारत को स्वाधीन बनाने के

Received: 15.01.2022 **Accepted:** 12.02.2022 **Published**: 12.02.2022

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.

Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC)
Official Publication of Indian Mental Health & Research Centre
ISSN: 2582-2004
Volume 05, Issue 01
DOI: 10.46523/jarssc.05.01.22
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 3.575

लिए प्रयासरत हैं एवं देश के नवयुवकों को गुलामी की जंजीर तोड़ फेंकने के लिए ललकारा है–

ले अंगड़ाई उठ, हिले धरा,
कर निज विराट स्वर में निनाद,
ते शत्रुराष्ट्र! हुँकार भरे,
फट जाय कुहा, भागे प्रमाद।
तू मौन त्याग, कर सिंहनाद,
रे तपी! आज तप का न काल
नवयुग शंखध्वनि जगा रही
तू जाग, जाग मेरे विशाल। 5

और प्रिंस आफ वेल्स के स्वागत में नयी दिल्ली का साज श्रृंगार देखकर उसकी तीव्र भर्त्सना की थी–

वैभव की दीवानी दिल्ली,
कृषक मेध की रानी दिल्ली,
अनाचार, अपमान, व्यंग्य की,
चुभती हुई कहानी दिल्ली।
दो दिन ही के 'बात–डांस में
नाच हुई बेपानी दिल्ली।
कैसी यह निर्लज्ज नग्नता,

Received: 15.01.2022 **Accepted:** 12.02.2022 **Published**: 12.02.2022

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.

Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC)
Official Publication of Indian Mental Health & Research Centre
ISSN: 2582-2004
Volume 05, Issue 01
DOI: 10.46523/jarssc.05.01.22
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 3.575

यह कैसी नादानी दिल्ली। 6

स्वाधीनता के बाद कुछ आलोचकों ने उन्हें निस्तेज हुआ मान लिया था। चीनी आक्रमण की बर्बरता से मर्माहत हो पुनः उनका पौरुष गरज उठा–

पर्वत पति को आमूल डोलना होगा,
शंकर को ध्वंसक नयन खोलना होगा।
ललकार रहा भारत को स्वयं भरणर है,
हम जीतेंगे यह समर हमारा प्रण है।

दिनकर की अनेक कविताओं में क्रांति का आह्वान दिया है, इसलिए उसमें अराजकता के तत्व भी दिखाई देते हैं–

उठ भूषण की भाव–रंगिणी।
लेनिन के दिल की चिनगारी।
युग मर्दित यौवन की ज्वाला।
जाग–जाग री क्रांति कुमारी।

कुरुक्षेत्र – उपनिवेशवाद विरोधी काव्य है, दिनकर इस उपनिवेशवादी शोषण को विप्लव और क्रांति का कारण तो मानते हैं, पर युद्ध का औचित्य वे स्वभाव के धरातल पर भी सिद्ध करते हैं। **'कुरुक्षेत्र' के निवेदन में कवि ने प्रश्न पूछा है**–युद्ध एक निन्दित और क्रूर कर्म है। किन्तु इसका दायित्व किस पर होना चाहिए। उस पर जो अनीतियों का जाल बिछाकर प्रतिकार को आमंत्रण देता है?

Received: 15.01.2022 **Accepted:** 12.02.2022 **Published**: 12.02.2022

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.

Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC)
Official Publication of Indian Mental Health & Research Centre
ISSN: 2582-2004
Volume 05, Issue 01
DOI: 10.46523/jarssc.05.01.22
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 3.575

या उस पर जो अनीतियों का जाल बिछाकर प्रतिकार को आमंत्रण देता है? या उस पर, जो इस जाल को छिन्न–भिन्न कर देने को आतुर है? **7**

यानी किसी का स्वत्व अनीतिपूर्वक छीन लेना ही युद्ध की मूल कारण है। कवि उपनिवेशवादियों को लक्ष्य कर सीधे कहता है–

पर जिनकी अस्थियाँ चबाकर शोणित पीकर तन का,
जीती है यह शांति, दाह समझो कुछ उसके मन का।
स्वत्व माँगने से न मिले, संघात पाप हो जाएँ,
बोलो धर्मराज शोषित ये जिएँ याकि मिट जाएँ।

अतः अन्याय को मिटाने के लिए लड़ना उचित है। अपने स्वत्व को प्राप्त करने के लिए जो भी किया जाय, सब समुचित है। भीष्म युधिष्ठिर से कहते हैं–

किसने कहा, पाप है, समुचित स्वत्व प्राप्ति हित लड़ना?
उठा न्याय का खड्ग समर में अभय मारना मरना।
न्यायोचित अधिकार माँगने से न मिले तो लड़ के,
तेजस्वी छीनते समर में जीत या कि खुद मर के।

हिन्दी के प्रख्यात आलोचक व विचारक विजेन्द्र नारायण सिंह का मत है कि–''दिनकर अत्यंत ही उग्र विचारों के राष्ट्रीय कवि है। गाँवों की जिस गरीबी का अनुभव उन्हें अपनी किशारोवस्था में हुआ था, उसकी बहुत ही मार्मिक कविताएँ उन्होंने लिखी। उन्होंने धीरे–धीरे यह समझा कि यह विपन्नता उपनिवेशवाद और सामंतवाद के गठबंधन से और भयानक हुई है। उपनिवेशवाद के तहत उन्हें न

Received: 15.01.2022 **Accepted:** 12.02.2022 **Published**: 12.02.2022

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.

Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC)
Official Publication of Indian Mental Health & Research Centre
ISSN: 2582-2004
Volume 05, Issue 01
DOI: 10.46523/jarssc.05.01.22
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 3.575

केवल राजनीतिक पराधीनता का ही एहसास हुआ वरन् राष्ट्रीय अस्मिता के भी लोप होने का बोध अत्यंत उत्कट रूप से हुआ।'' **8**

'कुरुक्षेत्र' के बाद दिनकर के धूप–छांह (1946), सामधेनी, बापू फिर इतिहास के आंसू, धूप और धुआं, मिर्च का मजा जैसे काव्य संग्रह आए। गांधी की हत्या पर दिनकर ने अद्‌भुत शोकगीत लिखा–

पकड़ो वे दोनों चरण, दासता जिनके सेवन से छूटी।
पकड़ो वे दोनों पग, जिनसे आजादी की गंगा फूटी।

गांधी की मृत्यु से एक युग का अंत हो गया–एक चिंतनधारा का अंत। आगे की राजनीति में हिंसा, आतंक, भाई–भतीजावाद, जातिवाद, धर्मवाद का संके हैं। भ्रष्ट नेताओं पर दिनकर की टिप्पणी–

जितने हरामजादे थे सरकार हो गए
टोपी पहन–पहन के नंबरदार हो गए।

हिन्दी के प्रख्यात आलोचक नामवर सिंह के शब्दों में कहा जा सकता है कि–''दिनकर की वाणी में ही दिनकर के बारे में कहा जा सकता है। विद्यापति के बाद छह सौ वर्षों तक यह भूमि किसी महाकवि की प्रतीक्षा करती रही और वह दूसरा महाकवि दिनकर के रूप में मिला। दिनकर निराला के समान ओज और ऊर्जा के शायद इस भारतवर्ष में सबसे बड़े कवि थे। दिनकर में सात्विक क्रोध, कोमल करुणा और सौंदर्य की अनूठी पहचान थी।'' **9**

Received: 15.01.2022 **Accepted:** 12.02.2022 **Published**: 12.02.2022

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.

Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC)
Official Publication of Indian Mental Health & Research Centre
ISSN: 2582-2004
Volume 05, Issue 01
DOI: 10.46523/jarssc.05.01.22
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 3.575

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *रामवृक्ष बेनीपुरी–हुंकार–लोकभारती प्रकाशन प्रयागराज–क्रांति का कवि – पहला संस्करण–1938)''*
2. विपथगा–हुंकार–लोक भारती प्रकाशन 2019–संस्करण–पृ0सं0–89)
3. वही–पृ0सं0–53
4. वही–पृ0सं0–55
5. वही पृ0सं0–73
6. वही पृ0सं0–64
7. दिनकर–निवेदन–कुरुक्षेत्र–राजपाल प्रकाशन 2013 संस्करण)
8. विजेन्द्र नारायण सिंह–रामधारी सिंह दिनकर–साहित्य अकादमी– 2012 संस्करण–पृ0–71
9. डॉ0 नामवर सिंह–'कमल–आज उनकी जय बोले'–दिनकर स्मृति माला–राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' स्मृति न्यास, दिल्ली–संपादक–नीरज कुमार–2015–पृ0सं0–61

Received: 15.01.2022 **Accepted:** 12.02.2022 **Published**: 12.02.2022

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.